बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरूष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सॉझी शक्ति द्वारा हिलाएं न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।"

वर्ष –1 अंक 7 सितम्बर 2007 मूल्यः 5 रू.

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस विशेषांक

साक्षरता से हमारा विकास

साक्षरता का मतलब है पढ़–लिख कर आगे बढ़ना। पढ़ाई लिखाई हमारे अंदर छुपे हुए गुणों को बाहर निकालने में मदद करती है। जिस तरह हीरे को खान से निकालकर, तराशकर चमकाया जाता हैं उसी तरह हर इंसान के अंदर मूल्यवान गुण छुपे रहते हैं जिन्हें शिक्षा द्वारा चमकाया जाता है। बहाई लेखों के अनुसार–''इंसान को अत्यंत मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानव जाति को उसके लाभ के योग्य बना सकती है।''श

हमारे सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए साक्षरता पहली सीढ़ी है। 'बरली की दुनिया' के इस अंक में ''साक्षरता से हमारा विकास'' विषय पर चर्चा करेंगे।

साक्षरता का महत्व

पढ़ने लिखने की कोई उम्र नहीं होती है, जब भी अवसर मिले हमें पढ़ना लिखना चाहिए। क्योंकि इंसान को शिक्षा की जरूरत होती है। आज के जमाने में विकास बहुत तेजी से हो रहा है। हम शिक्षा से अपना, अपने परिवार और अपने समुदाय का विकास कर सकते है। यदि हम पढ़े लिखे नहीं होंगे तो पिछड़े ही रह जाएंगे। आइए देखें साक्षरता से किस–किस तरह का विकास हो सकता है।

• सामाजिक विकास

लड़का हो या लड़की दोनों को पढ़ने लिखने का अधिकार है। जब दोनों पढ़े लिखे होंगे तभी एक विकसित समाज की रचना हो सकती है। कुछ लोग बचपन से ही लड़कों और लड़कियों में भेदभाव करते हैं। लड़कियों से घर के काम या मजदूरी करवाते हैं। लड़की के दिमाग में ये बातें डाल दी जाती हैं कि उन्हें जिंदगी भर चूल्हा चौका या घर के दूसरे काम करने हैं। जबकि लड़कों को अच्छा खाना, कपड़ा और खिलौने लाकर देते हैं, उनकी हर जिद पूरी करते हैं। जब हम दोनों को समानता देंगे तो ही सही सामाजिक विकास होगा। हमें लड़कियों को स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने का मौका देना चाहिए और लड़कों को यह समझाना चाहिए कि लड़कियों को भी उनके बराबर मानें। महिला शिक्षित होती है तो पूरे परिवार को शिक्षित कर स्वस्थ और खुशहाल बनाती है। वह एक बेटी के रूप में परिवार को और माँ बनने के बाद बच्चों को शिक्षा देती है। षिक्षित महिला को यह मालूम है कि डॉक्टर की लिखी दवा

को सही समय पर खाना है, गर्भवती महिला को टीके कब लगवाने हैं तथा कौन सी जाँच होगी आदि। स्वस्थ समाज के विकास के लिए शिक्षा ही मूलभूत आधार है। खाना, पानी, कपड़े, घर तथा अपने आसपास की जगह साफ रखकर हम स्वस्थ रह सकते हैं एवं कई तरह की बीमारियों से बच सकते हैं।

हमारे समाज में बाल विवाह, दहेज, लिंग भेदभाव, बलात्कार, भ्रूण हत्या, अंधविश्वास जैसी कई बुराइयाँ हैं। शिक्षा से इन बुराइयों को दूर कर समाज का विकास किया जा सकता है। बाल विवाह कानूनी अपराध है। भारतीय कानून में लड़की की शादी 18 साल और लड़के की 21 साल है। कम उम्र में शादी करवाने से लड़की या लड़के के माता पिता को सजा हो सकती है। हमारा कर्तव्य है कि सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन करें। इसके लिए हमें कानून की जानकारी होना चाहिए। दहेज भी समाज की एक बड़ी समस्या है जिसके कारण महिलाओं पर जुल्म किये जाते हैं, रोज महिलाओं की मौत होती है। सरकार ने इसे रोकने के लिए कानून बनाए हैं। हिन्दू विवाह दहेज अधिनियम के अनुसार दहेज लेना और देना दोनों ही अपराध हैं। इस समस्या को पढ़े लिखे और समझदार लोग ही खतम कर सकते हैं। समाज में महिलाएँ अभी भी बहुत असुरक्षित हैं। आए दिन बलात्कार की घटनाएँ होती है। बलात्कार के बाद महिलाएँ अपने आप को हीन समझने लगती हैं। ऐसा होने पर महिला को डरकर नहीं बैठना चाहिए बल्कि उस पर जुल्म करने वाले अपराधी के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज करवानी चाहिए ताकि अपराधी को सजा मिल सके। ऐसा करना उसका अधिकार है। इसमें घरवालों और सगे संबंधियों को उस महिला की मदद करनी चाहिए, उसे हिम्मत दिलानी चाहिए ताकि उसका हौसला ना टूटे। जन्म से पहले भ्रूण हत्या, लिंग की जाँच करवाना गैर कानूनी काम है। ऐसा करने और करवाने वाले दोनों को सजा हो सकती है। बाल विवाह, बलात्कार, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को खतम करने के लिए हमारा कर्तव्य है कि हम बच्चों को शुरू से ही नैतिक शिक्षा दें ताकि वे अच्छे इंसान बनकर समाज को अच्छा व सुषिक्षित बनाने में अपना योगदान दे सकें।

सरकार ने हमें बहुत से अधिकार दिए हैं। अपने अधिकारों को हम तभी जान सकेंगे जब हम पढ़े लिखे होंगे। हमारा कोई शोषण नहीं कर पाएगा। यदि किसी मजदूर को काम करते समय चोट लगी या कोई दुर्घटना हुई है तो उसे मालिक से मुआवजा लेने का कानूनी अधिकार है। अगर मालिक पैसा देने से मना करता है तो मजदूरों के लिए बने लेबर ऑफिस में जाकर प्रबंधक को शिकायत कर सकता है और अपने अधिकार के लिए लड़ सकता है। साक्षर होकर हम अन्याय को रोक सकते हैं, सबको न्याय दिलवा सकते हैं। पवित्र ग्रंथों में भी कहा गया है कि अन्याय करने से भी बड़ा पाप अन्याय सहना है। बहुत लोग जो मजदूरी करते हैं, कई बार कुछ बेईमान लोग उनके निरक्षर होने का फायदा उठाते हैं और उन्हें काम के बदले कम मजदूरी देते हैं। अँगूठा लगवाकर या जिन्हें केवल हस्ताक्षर आते हैं उन्हें धोखा देते हैं। पढ़े लिखे को कोई धोखा नहीं दे सकता और वह अपने ऊपर हो रहे अन्याय को नहीं सहेगा। कई बार जब जमीन को गिरवी रखते समय या बँटवारे के समय गाँव का सरपंच या पटेल रिश्वत माँगते हैं। यदि हम साक्षर हैं तो जान सकते हैं कि रिश्वत देना और लेना दोनों जुर्म है। हम अपनी जमीन जायदाद का लेनदेन सही ढंग से कर सकते हैं। गाँव का सरपंच या पटेल हमें ठग नहीं सकता।

शिक्षा से कला और विज्ञान का उपयोग करना भी सीखते हैं। हम घर बैठे दुनिया में हो रही घटनाओं के बारे में जान सकते हैं। रेडियो और टी.वी. पर किसानों के लिए कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिसमें खेत में कब, कौन सी फसल लगाना है, कौन सी खाद देना है। कीड़ों से फसल को बचाना। वैज्ञानिक ढंग से देशी खाद बनाना भी बताया जाता है। इंटरनेट के द्वारा भी बहुत सी जानकारियाँ ले सकते हैं लेकिन इसके लिए शिक्षित व प्रशिक्षित होना जरूरी है। अपने समुदाय को इनके फायदों के बारे में बताएँ। पढ़ लिखकर इंसान अपने निर्णय खुद लेकर समाज को सही दिशा दे सकते हैं। लोगों के साथ मिलजुलकर शांति, प्रेम व एकता से रह सकते हैं। पर्यावरण का ध्यान रखते हुए अपने गाँव/शहर को सुन्दर व व्यवस्थित रख सकते हैं।

• आर्थिक विकास

इंसान पढ़ लिखकर कोई भी रोजगार या व्यवसाय के द्वारा अपना व परिवार का पालन कर सकता है। हर इंसान में अलग–अलग क्षमताएँ होती हैं जिनका उपयोग करके वे अपना आर्थिक विकास कर सकते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षक, वैज्ञानिक, पत्रकार, लेखक, कवि, बैंककर्मी, पुलिस, व्यवसायी कुछ भी बन सकते हैं। पढ़ाई का उपयोग अपनी कमाई और दूसरों की सेवा में कर सकते हैं। पढ़ाई लिखाई इंसान को जिम्मेदार बनाती है। षिक्षित इंसान खेती के लिए कम जमीन व कम पानी में ज्यादा फसल उगाने का प्रयास करता है। महिलाएं कटाई–सिलाई, कढ़ाई, बाटिक, ब्लॉक प्रिटिंग या खाने पीने की चीजें बनाकर बेच सकती हैं तथा दूसरी महिलाओं को भी ये कला सिखाकर पैसे कमा सकती हैं। आंगनवाड़ी में काम कर सकती हैं या नर्स बन सकती हैं। हम किराने की, एस.टी.डी. या कोई अन्य दुकान

खोल सकते हैं। कम्प्यूटर और टाइपिंग सीखकर दूसरों को सिखा सकते हैं या नौकरी कर सकते हैं। गाँव के बच्चों को पढ़ाने का काम कर सकते हैं। अगर गाँव में स्कूल नहीं है तो अपना स्कूल भी खोल सकते हैं। मशीन खरीदने या कोई भी व्यवसाय शुरू करने के लिए बैंक से लोन ले सकते हैं। सभी जानकारी समझ कर खुद ही फॉर्म भर सकते हैं और लोन के रूपए सही ढंग से खर्च कर सकते हैं। इसके अलावा महिलाएँ स्वयं सहायता समूह बनाकर पैसों की बचत कर सकती हैं। पैसों का उपयोग व्यवसाय शुरू करने में कर सकती हैं। कई ऐसी सरकारी योजनाएं भी हैं जिनकी मदद से नए रोजगार शुरू किए जा सकते हैं। ग्राम पंचायत की मदद से इन योजनाओं की जानकारी ली जा सकती है। इस तरह शिक्षा का उपयोग कर इंसान अपने जीवन व दूसरों के जीवन का भी आर्थिक विकास करते हैं और अपना ज्ञान भी दूसरों तक फैलाते हैं। इससे आत्मनिर्भर बनकर आप अपने पर विश्वास बढ़ाते हैं और ज्यादा अच्छा करने की कोशिश करते हैं।

• मानसिक विकास

ईश्वर ने हम सबको विचार करने, सोचने व सही और गलत क्या है इन सबके लिये बुद्धि दी है। शिक्षा हमारे ज्ञान व योग्यता को बढ़ाती है। इससे हमारा आत्मविश्वास व समाज में भी सम्मान बढ़ता है। विचार अच्छे होते हैं तो हम अच्छा काम करते हैं। विज्ञान का आविष्कार इंसान ने अपनी बुद्धि से ही किया है। बिजली, पंखा, साईकल, बस, ट्रेन, मोबाईल, कम्प्यूटर, टी.वी., रेडियो और रोज के जीवन में इस्तेमाल होने वाली चीजों को बनाया है। हम चाहे जो भी शिक्षा ले रहे हों खेती की, स्वास्थ्य की, इंजीनियर की, डॉक्टर की, सिलाई की उस शिक्षा का उपयोग कर योग्यता व अनुभव बढ़ा सकते हैं। हमारे अंदर नई चेतना का विकास होता है और हम स्वतंत्र रूप से सोच समझकर निर्णय ले सकते हैं। हमारे ज्ञान का स्तर बढ़ता है, व्यवहार में बदलाव आता है, परिस्थिति को समझ सकते हैं, जीवन के प्रति सकारात्मक सोच रखते हैं इस तरह से साक्षरता मानसिक विकास में सहायक होती है। हम अपने दिमाग का जितना उपयोग करते हैं उसकी क्षमता उतनी ही बढ़ती जाती है। इससे हमारा आत्मविश्वास कई गुणा बढ़ जाता है। हम किसी भी चुनौती और कठिनाई का सामना करने को हमेशा तैयार रहते हैं तथा प्रगति करते जाते हैं।

• आध्यात्मिक विकास

साक्षर होकर हम सत्य की खोज करते हैं। पवित्र पुस्तकों को पढ़कर ईश्वर के बारे में जानते हैं। ईश्वरीय अवतारों की शिक्षाओं को पढ़कर उसका मतलब समझ पाएंगे और सही बातों को जान पाएंगे। इस दुनिया में जन्म लेने का उद्देश्य जानते हैं। अपने अंदर सद्‌गुणों का विकास कर अपनी व दूसरों की भलाई करते हैं। अगर हम पढ़े लिखे नहीं होंगे तो पवित्र ग्रंथ में लिखी हुई बात को पढ़ नहीं पाएंगे और दूसरों की कही हुई बातों को ही मानते रहेंगे। जब हम पढ़ते हैं तो हमारे मन में प्रश्न उठते हैं, उनके उत्तरों की खोज करने के लिए और पढ़ते हैं, इस तरह हमारे पढ़ने का सिलसिला जारी रहता है और हम ज्यादा ज्ञान पाते हैं। सभी काम शुद्ध मन से, ईमानदारी, प्रेम, दया, करूणा और दूसरों की भलाई के लिए होना चाहिए। आध्यात्मिक शिक्षा से हम एक दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग करना सीखते हैं। अच्छा ज्ञान हमें नशा, पीठ पीछे बुराई, चोरी नहीं करना आदि सिखाती है। शिक्षा से गलत रीति रिवाजों में सुधार होता है। सच्चाई की राह पर चलकर पूरा समाज शांति, भाईचारा और एकता से रह सकता है। शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकते हैं। बच्चों को शुरू से ही ईमानदारी, अनुशासन, सच्चाई, बड़ों का आदर करना जैसे आध्यात्मिक गुण सिखाए जाएँ। यही गुण बच्चों के सही विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्थान में साक्षरता प्रशिक्षण

साक्षरता संस्थान के सभी प्रशिक्षणों की नींव है। साक्षरता में सभी प्रशिक्षणार्थी भाग लेते हैं जिसमें उन्हें हिन्दी भाषा सिखाई जाती है। साक्षरता के दो प्रशिक्षण होते हैं एक प्रशिक्षण में निरक्षर बहनों को साक्षर किया जाता है और दूसरा प्रशिक्षण उन्हें दिया जाता है जो स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ चुकी होती हैं, इन्हें सहयोगी कहते हैं जिसमें उन्हें दूसरों को साक्षर करना सिखाया जाता है। कक्षा में पढ़ाई करने के लिए कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँटते हैं। छोटे समूहों में पढ़ाना सरल होता है तथा हर एक प्रशिक्षणार्थी पर अच्छी तरह से ध्यान दिया जाता है। हर समूह में एक सहयोगी होती हैं। ये सहयोगी पूरे प्रशिक्षण में प्रशिक्षिका की मदद करती है और अगर उन्हें पढ़ाने में कोई मुश्किल आती है तो प्रशिक्षिका उनकी मदद करती हैं। जिससे महिलाएँ अपने खुद की समस्याएँ समझकर उन्हें दूर करना सीखती हैं और अपनी जिम्मेदारियों को समझती हैं।

संस्थान की अपनी साक्षरता पुस्तक 'आओ पढ़ना लिखना सीखे और सिखाएँ'

साक्षरता पढ़ाने के लिए जो पुस्तक उपयोग में लाई जाती है उसे संस्थान में पिछले 23 सालों में प्रशिक्षणार्थियों, प्रशिक्षिकाओं, स्टाफ, स्वयं सेविकाओं, व्यवसायिक एवं अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षा और महिलाओं के क्षेत्र मे सेवा दे रहे विशेषज्ञों के सहयोग से तैयार की गई है। इस पाठ्यक्रम में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है ताकि सभी इसे आसानी से समझ सकें।

साक्षरता सीखने के तरीके

• सत्र योजना

साक्षरता पाठ्यक्रम में कुल 26 पाठ हैं जिन्हें 86 सत्रों में बांटा गया है। हर पाठ में एक–एक घंटे के तीन या चार सत्र होते हैं। हर सत्र में सत्र योजना होती हैं जिसमें क्या पढ़ाया जाएगा उसकी जानकारी दी जाती हैं। हर दिन एक सत्र कक्षा में पढ़ाया जाता है। तीन माह में सभी प्रशिक्षणार्थी पूरी तरह से साक्षर हो जाती हैं।

• समूह चर्चा और चित्र

साक्षरता पाठ्यक्रम के हर पाठ में एक मुख्य शब्द होता है जो रोज के जीवन की बातों या समस्याओं से जुड़ा होता है जिस पर प्रशिक्षणार्थी चर्चा करते हैं। जैसे मान लें कि पाठ का नाम 'महिला' है तो इस पाठ में महिला के ऊपर चर्चा करते हैं और महिला से संबंधित एक चित्र दिया जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार से सेवा करते हुए दिखाया जाता है। चित्रों से जानकारी जल्दी, अच्छी तरह, आसान और प्रभावी तरीके से समझ में आती है। इन चित्रों में गाँव के जीवन और रहन–सहन की झलक मिलती है।

• लिखना, पढ़ना और बोलना

आमतौर पर स्कूलों में जब पढ़ना सिखाते हैं तो सबसे पहले सारे अक्षर सिखाते हैं और बाद में मात्राएँ सीखते हैं तब जाकर शब्द और वाक्य सिखाते हैं। लेकिन बरली संस्थान में साक्षरता पढ़ाने का तरीका बिल्कुल सीधा और सरल है। हर पाठ के मुख्य शब्द पर चर्चा के बाद उस शब्द को तोड़कर उसके अक्षरों और मात्राओं को

अलग–अलग कर बोलना सिखाते हैं। जैसे न + ा + म अक्षरों से नए शब्द बनाते हैं। जैसे नम, नमन, मना, मनाना, मान, मामा, नाना आदि। इसी तरह कुल 26 पाठों में अलग–अलग अक्षरों एवं मात्राओं को पहचानना, बोलना एवं लिखना सिखाया जाता है।

• अपनी बोली

सहयोगी को अपने समूह के प्रशिक्षणार्थियों की बोली आती है जिससे वे नई और कठिन जानकारियों को उन्हीं की बोली में समझाते हैं। प्रशिक्षण के पहले दो से तीन सप्ताह तक प्रशिक्षणार्थियों को ज्यादा से ज्यादा उनकी बोली में समझाया जाता है क्योंकि शुरूआत में उन्हें हिन्दी अच्छी तरह समझ मे नहीं आती।

• अक्षर कार्डों से सीखना

अक्षर कार्ड पुष्टे के छोटे चौकोर टुकड़े होते हैं जिन पर अक्षर और मात्राएं लिखी होती हैं जिन पर अक्षर छपे होते हैं।

इनकी सहायता से बहनें अक्षर और पाठ में दिए षब्दों को बनाना सीखती हैं और बार–बार अभ्यास करती हैं।

• खेल–खेल में सिखाना

साक्षरता के प्रशिक्षण में खेल का बहुत महत्त्व है। पढ़ाने के साथ प्रशिक्षणार्थियों को चुनौती खेल, सुनकर लिखने का

खेल, अंक कड़ी खेल खिलाए जाते हैं। खेल से उनमें जोश आ जाता है और ज्यादा अंक लेने के इच्छा से वे सीखते हैं और खेल–खेल में सब याद कर लेते हैं।

• दोहराव और परीक्षा

पाठों और सत्रों में दी गई जानकारी का मूल्यांकन कई तरीकों से होता है। पाठ की शुरूआत में प्रशिक्षिका पिछले पाठों में पढ़ाए गए सभी विषयों का संक्षेप में दोहराव करवाती है। पाठ के अंत में प्रशिक्षणार्थियों और सहयोगियों की परीक्षा ली जाती है। परीक्षा कापियों की प्रशिक्षिका द्वारा जांच की जाती है कि प्रशिक्षणार्थियों को पढ़ाई गई बातें

कितनी समझ में आई हैं। जो नही समझ आया उसको सुधार कर फिर समझाया जाता है।

• अन्य प्रशिक्षण में साक्षरता

प्रशिक्षणार्थी बहनें सिलाई में इंच टेप की मदद से गिनती सीखती हैं। लंबाई–चौड़ाई नापना, नाप लिखना, कढ़ाई में अपना नाम बनाती हैं। ड्रॉफ्ट बनाते समय नाप के अनुसार अलग–अलग कपड़ों को जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग

करना सीखते हैं। स्वास्थ्य की पढ़ाई में प्रशिक्षणार्थी कई तरह की बीमारियों के नाम, इलाज और बचाव के तरीके जानकर लिखना सीखती हैं।

व्यक्तित्व विकास की कक्षा में सदगुण जैसे एकता, मित्रता, सहयोग, सहनशीलता, परामर्श आदि के बारे सीखती हैं। रोज प्रार्थनाएँ करती हैं। अपने देश के लिए वफादारी, देश प्रेम, भाईचारा, संविधान में दिए गए अधिकार, महिलाओं के अधिकार व कानून, महिला सशक्तिकरण विषयों को पढ़कर स्वयं को जागरूक करती हैं। साथ ही नैतिक शिक्षा पर आधारित छोटी–छोटी कहानियाँ भी पढ़ना और लिखना सीखती हैं। खेत में काम करते समय पेड़ों, फलों, औजारों की गिनती करते हैं और उनके नाम जानते हैं। फलों और सब्जियों को तौलना और उन्हें लिखना भी सीखती हैं।

• संस्थान के रोज के जीवन में साक्षरता

संस्थान में दिन भर के कामों में भी साक्षरता सिखाई जाती है जैसे खाने के बर्तनों, ओढ़ने बिछाने के चादरों, बिस्तरों में उन्हें अपना–अपना नम्बर ढूँढ़ना पड़ता है। इसके अलावा बोलचाल की हिन्दी सीखना, साधारण शब्द लिखना, पढना, 1 से 100 तक गिनती करना, घड़ी देखना, दिन, महीनों के नाम, पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र व डाक टिकट, नोटों, सिक्कों की जानकारी और रूपयों का हिसाब किताब भी करना सिखाया जाता है। रसोई में लगने वाले सामान जैसे आटा, चावल, पोहा, मसाले, शक्कर व चाय वगैरह तोलना और उन्हें लिखना सीखती हैं।

• दूसरों को साक्षर करने का तरीका

सहयोगी बहनें जो समूहों में लड़कियों को साक्षरता पढ़ाती हैं उन्हें भी दूसरों को प्रशिक्षित करने का प्रशिक्षण साथ–साथ दिया जाता है जिसका अभ्यास वे अपने समूह व कक्षा में करती हैं। बाद में गाँव जाकर दूसरे लोगों को साक्षर करती हैं। शिक्षित होने के लिए सीखने वाले के साथ–साथ सिखाने वाले की भी सक्रिय भागीदारी होना चाहिए। इस संबंध में बहाई लेखों में कहा गया है कि साक्षर बनाना या साक्षर करना एक आध्यात्मिक कार्य है, पूजा के समान है, एक सेवा है, अंधेरे में दिया जलाने के समान है और यह भी कि ''वह शिक्षक धन्य है जो दूसरों को पढ़ाने का काम अपने ऊपर लेता है।'' दूसरों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेने वाले शिक्षक को महान कहा गया है क्योंकि यह एक महान, नेक और पवित्र कार्य है।

• नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा

तीन महीने के साक्षरता प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षणार्थी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग द्वारा आयोजित कटाई सिलाई की परीक्षा में बैठने के योग्य हो जाते हैं ।

उन्हें कटाई सिलाई में पूछने वाले प्रश्न उत्तर याद करवाए जाते हैं व लिखने का अभ्यास करवाते हैं। परीक्षा शुरू होने के पंद्रह दिन पहले रोज उनकी परीक्षा ली जाती है जिससे परीक्षा के समय उन्हें कोई डर या परेशानी नहीं आए।

साक्षरता बनाए रखने के प्रयास

प्रशिक्षण लेकर प्रशिक्षणार्थी बहनें पढ़ना लिखना न भूलें इसके लिए संस्थान ने कुछ प्रयास किए हैं जो इस प्रकार है।

■ साक्षरता की पुस्तक

बहनें साक्षरता की पुस्तक घर ले जाती हैं। जिसका उपयोग वो स्वयं करके दूसरों को पढ़ना लिखना भी सिखाती हैं।

■ संस्थान की पत्रिका 'बरली की दुनिया '

संस्थान से हर महीने 'बरली की दुनिया' पत्रिका निकलती

है। इस पत्रिका की भाषा सरल रहती है जो आसानी से समझ में आ जाए। पत्रिका निकालने का मुख्य उद्देश्य है कि प्रशिक्षण लेने के बाद बहनें पढ़ना–लिखना न भूल जाएँ। इसलिए ये पत्रिका उन्हें हर माह भेजी जाती हैं। हर अंक में उन्हें स्वास्थ्य, साक्षरता, पर्यावरण या अन्य सामाजिक विषयों की जानकारी दी जाती है। संस्थान में होने वाली गतिविधियाँ व समाचार प्रकाशित किए जाते हैं। प्रशिक्षण की शुरूआत और अंत की जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से भेजी जाती है। इससे गांव की बहनों से संपर्क बना रहता है व उन्हें जागरूक बनाने में मदद मिलती है।

■ साक्षरता प्रशिक्षण कार्यशाला

साक्षरता दिवस पर हर साल तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जाती है जो संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक हिस्सा है। इस कार्यशाला का उद्देश्य है कि प्रशिक्षणार्थियों को साक्षरता के प्रति जागरूक किया जाए और उन्हें यह समझाया जाए कि साक्षरता सर्वांगीण विकास के लिए कितनी जरूरी है। इसमें प्रशिक्षणार्थी बहनें साक्षरता के महत्व, फायदों, उपयोग एवं अन्य विषयों पर चर्चा करती हैं। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ, चिकित्सक, समाजसेवी एवं अनुभवी लोग भी चर्चा करते हैं। चर्चा के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को भी अपने विचारों को खुलकर सबके सामने रखने का मौका मिलता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का संदेश

दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बान की मून ने कहा है कि इस वर्ष का विषय ''स्वास्थ्य और साक्षरता'' है। स्वस्थ रहने में साक्षरता की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। पढ़ने लिखने से आत्मविश्वास बढ़ता है। बच्चों का लालन–पालन जब पढ़ी लिखी माताएँ करती हैं तो उसे स्वस्थ वातावरण और अच्छी शिक्षा मिलती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुमानित आँकड़ों के अनुसार संसार में 77 करोड़ 40 लाख लोग पढ़े लिखे नहीं हैं, आधी से ज्यादा संख्या महिलाओं की है। कोई 7 करोड़ 20 लाख बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। शिक्षा के संबंध में लोगों को जागरूक करना अभी भी बाकी है। वर्ष 2015 तक सभी बच्चों को स्कूल भेजना। साक्षरता की दर बढ़ने से माता और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार, एच. आई. वी./एड्स, मलेरिया और अन्य रोगों की रोकथाम के काम तेजी से हो सकेंगे। समाज के विकास के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य जरूरी है। इस अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर साक्षरता की गति तेज करने के लिए अपने प्रयास को गति प्रदान करें।

संस्थान के समाचार

साक्षरता दिवस के कार्यक्रम

संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर 6 से 8 सितंबर 2007 तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रतिभागियों ने साक्षरता का महत्व, स्वच्छता, स्वास्थ्य और साक्षरता, साक्षरता जीवन के विकास की पहली सीढ़ी, महिला हिंसा अधिनियम, चिकनगुनिया और डेंगू आदि विषयों पर चर्चा की। कार्यशाला में मध्यप्रदेश वॉलेंटरी हेल्थ एसोसिएशन के कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार सिन्हा ने कहा कि ज्ञान होने पर हमें सही और गलत बातों में फर्क करना आना चाहिए। अभ्यास की कमी के कारण लोग गलती करते हैं। मुम्बई से आई बॉयोटेक्नोलॉजिस्ट श्रीमती आभा तिवारी ने प्रशिक्षणार्थियों को बताया कि महिलाओं को पढ़ा लिखा होना जरूरी है उन्हें अपना ख्याल रखना चाहिए क्योंकि वे अपना मायका व ससुराल को सँभालती हैं।

कलाकर्मी श्री चिन्मय मिश्रा और श्रीमती सरोज मिश्रा ने कला को साक्षरता से जोड़कर बताया कि हमारी पहचान हमारी कला व संस्कृति से होती है। हम साक्षर होंगे तो अपनी कला और संस्कृति को दुनिया के सामने लाएँगे जिससे समाज के प्रति जिम्मेदारी बढ़ जाती है। कार्यशाला के समापन पर मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार व समाज सेवी श्री महेन्द्र जोशी ने कहा कि वे पिछले 20 साल से संस्थान में महिलाओं के विकास हेतु प्रयास के प्रशंसक रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनुपमा नेगी ने कहा कि प्रशिक्षण से यहाँ की महिलाएं काफी सशक्त बन चुकी हैं। वे अपने गांव में जाकर छोटा बरली ग्राम बनाएँ तथा संपर्क में आने वाली महिलाओं को सशक्त व जागरूक बनने में मदद करें। उन्होंने कहा कि पढ़ना रोटी खाने जैसा है जो जरूरी है।

इस मौके पर संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने कहा कि साक्षरता का मतलब संपूर्ण विकास है जिसमें शरीर, मन, आत्मा और सामाजिक विकास है। साक्षरता का जो सही उपयोग करते हैं वे गाँव, देश, समाज और दुनिया की भलाई के लिए काम करते हैं। बरली संस्थान भी इसी दिशा में काम कर रहा है। कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों ने अपने अनुभव व्यक्त किए। सरिता कुमारी ने बताया महिलाएँ पढ़ लिख कर ही अपने अधिकारों को जान सकती हैं और उसका सही उपयोग कर सकती हैं। कुमारी रेखा सिन्हा ने कहा कि जब तक हमें स्वास्थ्य संबंधी बातों की सही जानकारी नहीं होगी तब तक हम अपने स्वास्थ्य का सही ढंग से ख्याल नहीं रख सकते हैं। कुमारी रितु ने कहा कि पढ़ने लिखने से हमें हर बात की जानकारी होती है जिसे हमसे कोई छीन नही सकता है।

कुमारी हिरू ने कहा कि बिना पढ़े लिखे हम सही ढंग से नाप नहीं ले सकते हैं और न ही सिलाई कर सकते हैं। कुमारी ममता ने कहा कि पढ़ लिख कर हम धर्म की किताबें पढ़ सकते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

प्रषिक्षणार्थी साक्षरता पर गीत गाते हुए

हम परिवार एवं सभी लोगों के साथ मिलजुलकर रहते हैं, और एक अच्छा परिवार, समाज व दुनिया बना सकते हैं। कुमारी अमृता पाठक ने कहा कि भारत में महिला हिंसा रोकने के लिए कानून बनाए गए हैं लेकिन हम अपने अधिकारों व कर्तव्यों को जानेंगे तो शोषित होने से बच सकते हैं।

विस्तार केन्द्र कांकेर में साक्षरता दिवस मनाया

बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र कांकेर में साक्षरता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र प्रभारी लता यादव ने कहा कि केवल अक्षर ज्ञान होना ही नहीं बल्कि हमारे आसपास जो भी गतिविधियाँ हो रहीं है उसके प्रति जागरूक रहना चाहिए क्योंकि साक्षरता वह कुंजी है जो हमारे विकास के द्वार खोलती है, ज्ञान की ताकत से हम अपने तथा परिवार व समाज का विकास कर सकें। पूर्व प्रशिक्षणार्थी सुमित्रा सलाम ने कहा कि ''वे विस्तार केन्द्र में तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान अच्छी तरह समझ गई हैं कि आज महिलाओं को विकास करने के लिए आर्थिक, सामाजिक एवं पढ़ाई के क्षेत्र में भी मजबूत होना है जब हम शिक्षित होंगे तो सही, गलत की पहचान कर सकते हैं। मैंने कटाई–सिलाई, स्वास्थ्य शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास का ज्ञान सीखा है उसे अपने जीवन में ढालूंगी एवं बारहवीं की पढ़ाई करूंगी। देवकी उसेण्डी ने कहा कि ''हम महिलाओं को सशक्त होना है तो शिक्षित होना जरूरी है शिक्षा से हम आर्थिक रूप से मजबूत होकर स्वयं आत्मनिर्भर बनेंगे और दूसरों पर निर्भर नहीं रहेंगे। ''जयमिला वट्टी ने कहा कि ''केन्द्र में सिखाए गई जानकारियों को वे नहीं भूलेंगी क्योंकि कागज में लिखी हुई बातें मिट भी जाती हैं लेकिन मन में लिखी हुई बात कोई नहीं मिटा सकता।''

मुख्य अतिथि पैराडाईज स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती रश्मि रजक ने कहा कि शिक्षा ही वह रोशनी है जो सही जीवन का रास्ता दिखाती है। शिक्षा से ही हम अपने शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा बौद्धिक विकास करते हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री धुलजी रावल ने कहा कि आपने जो बातें बरली विस्तार केन्द्र में सीखी वह अपने परिवार व समाज में बताएं और अपने समुदाय को सहयोग दें। विशेष अतिथि विस्तार केन्द्र के सदस्य श्री मोतीराम यादव ने कहा कि ''यह प्रसन्नता और संयोग की बात है कि आज बालिका शिक्षा जरूरी है क्योंकि बालिका ही आगे जाकर माँ बनेगी और माँ ही बच्चे की पहली शिक्षिका है क्योंकि जब वह स्वयं शिक्षित और संस्कारित होगी तो अपने बच्चे को संस्कारवान नागरिक बनाएगी।''

बरली की फोटो को प्रथम पुरस्कार

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय छाया प्रतियोगिता में दैनिक भास्कर के चीफ फोटो पत्रकार श्री ओ.पी. सोनी को पहला स्थान मिला। विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री सोनी ने प्रतियोगिता में बरली संस्थान की प्रशिक्षणार्थियों की फोटो प्रदर्शित की थी। इसका शीर्षक था 'साक्षरता और विकास'। उन्हें पहले भी संस्थान के फोटो पर पुरस्कार मिल चुके हैं।

जलने के कारणों और इलाज की जानकारी

2 सितंबर 2007 को इंदौर के चोइथराम अस्पताल से डॉ. शोभा चमनिया ने संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों को जलने के कारण व इलाज के संबंध में जानकारी दी। साथ में सलाहकार सुश्री रंजना, नर्स अम्मानी थॉमस और सहायिका रीतू कानूनगो भी थी। उन्होंने बताया कि हम कई तरह से जल सकते हैं जैसे दिया, अंगारे, चूल्हा, गरम तेल, पटाखों, एल.पी.जी. गैस या बिजली का करंट आदि के कारण दुर्घटना हो जाती है जिससे इंसान की जान भी जा सकती है। जलने के बाद चमड़ी खराब हो जाती है। जब षरीर का कोई भी अंग जले तो पानी डालना चाहिए या गीला कपड़ा बाँधना चाहिए। अगर पूरा शरीर जल रहा है तो जलते शरीर को जमीन पर लिटाकर लुढ़काना चाहिए, कंबल लपेटना चाहिए या फिर पानी डालना चाहिए। अगर पूरा शरीर गंभीर रूप से जल गया हो तो मरीज को तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए। उन्होंने जलने से बचने के लिए कुछ सावधानियों के बारे में बताया। केरोसिन का उपयोग करते समय केरोसीन आग के पास न हो। बच्चों को केरोसीन से दूर रखना चाहिए और ठंडे स्टोव में केरोसिन भरना चाहिए। प्रेशर वाला स्टोव का इस्तेमाल ध्यान से करना चाहिए। गैस का काम खत्म होते ही नॉब बंद कर देना चाहिए। गैस की पाइप छह महीने

में बदलना चाहिए। बच्चे जब रॉकेट, अनार जैसे पटाखे जलाएँ तो उनके साथ रहना चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही करने से बच्चों की आँखें जल सकती है, वे अंधे भी हो सकते हैं। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों से भी इस संबंध में कुछ सवाल पूछे कि गाँव में जल जाने पर वे क्या उपाय करते हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की उपसचिव संस्थान में

21 सितंबर 2007 को महिला एवं बाल विकास मंत्रालय नई दिल्ली की उपसचिव श्रीमती अर्चना अवस्थी विषेष तौर पर इन्दौर बरली संस्थान देखने आईं। उन्होंने बताया कि उनका उद्देष्य है कि बरली संस्थान के कार्यक्रमों से उनका विभाग सीखना चाहता है कि किषोरी पोषण योजना को कैसे सफल बनाया जाए। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से मिलकर प्रशिक्षण की जानकारी ली और पूछा कि अगर उन्हें 6 किलो अनाज और प्रशिक्षण में से किसी एक को चुनने का मौका दिया जाए तो वे किसे चुनेंगे?

श्रीमती अर्चना अवस्थी, उपसचिव, महिला बाल विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के साथ संस्थान के निदेषक मंडल की सदस्या डॉ.(श्रीमती) गीता हांडा

सभी ने कहा कि वे प्रशिक्षण लेना पसंद करेंगे क्योंकि ये उनके पूरे जीवन में काम आएगा। अनाज तो कुछ दिनों में खतम हो जाएगा। उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी भी कई प्रश्न किए जिनका सभी ने सही जबाव दिया। वे प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास, सूझबूझ, ग्रामीण आदिवासी महिलाओं के प्रशिक्षण, रहने की व्यवस्था, वातावरण व समाज के विकास में संस्थान का योगदान देखकर कहने लगीं कि वे बरली संस्थान के अनुभव का अपनी योजना में उपयोग करेंगी।

स्वयंसेविका

न्यूजीलैंड की कु. यास्मिन मोहम्मद ने 16 अगस्त से 22 सितंबर 2007 तक अपनी सेवा देकर जाती बार कहा कि संस्थान महिलाओं के विकास के लिए प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। यहां पर सेवा देकर उन्हें बहुत खुशी हुई। भविष्य में दुबारा मौका मिला तो वे फिर यहाँ सेवा देने जरूर आएंगी।

संस्थान में आए मेहमान

29 सितंबर 2007 को जेनेवा के एक्सन फॉर द सपोर्ट ऑफ डेप्राईव्ड चिल्ड्रन संस्था के निदेशक श्री साइरल प्रिसटे व सुश्री कनक मित्तल संस्थान देखने आए। यह संस्था असहाय बच्चों के लिए काम करती है। संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन व निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने उन्हें यहाँ पर चलाए जाने वाले गतिविधियों की जानकारी दी। वे संस्थान में काम कर रहे लोगों का काम के प्रति समर्पण और सेवाभाव देखकर बहुत प्रभावित हुए।

संस्थान का अगला प्रशिक्षण

संस्थान का अगला छह माह व 1 साल का प्रशिक्षण 15 नवम्बर 2007 से शुरू होगा जो यह प्रशिक्षण लेना चाहती हैं वह संस्थान से फॉर्म मंगवाकर आवेदन कर सकती है। फॉर्म भर कर भेजने की अंतिम तारीख 10 नवम्बर 2007 है। इस तारीख से पहले फार्म संस्थान में पहुँचा दें। जो बहनें पढ़ना लिखना नहीं जानती है वह भी यह प्रशिक्षण ले सकती है। इस प्रशिक्षण में पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ उन्हें पढ़ना–लिखना व कटाई–सिलाई सिखाकर माह अप्रैल 2008 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा, नई दिल्ली की परीक्षा दिलवाई जाएगी। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा की कटाई–सिलाई की परीक्षा के लिए चार पासपोर्ट साईज फोटो, जन्म प्रमाण पत्र की दो फोटो कापी साथ भेजें। अगर पढ़ी लिखी है तो अंक सूची की दो फोटो कापी व 570/– रूपये नगद या मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के नाम से भेजें। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा की कटाई –सिलाई की परीक्षा की फीस 270/–रूपये हैं और संस्थान में पढ़ाए जाने वाली स्वास्थ्य, साक्षरता, और कटाई–सिलाई की पुस्तकों का शुल्क 300/–रूपये है। 1 साल का प्रशिक्षण लेने वाली बहनों को 10 वीं पास होना जरूरी है तभी वे हिन्दी, अंग्रेजी टाईपिंग व कम्प्यूटर सीख सकती हैं। टाईपिंग की परीक्षा व आवेदन का शुल्क 370/– रूपये हैं।

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

_____

_____

_____

_____

विषेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गाँव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार ''बरली की दुनिया'' में छाप सकें।

संपादक ''बरली की दुनिया''
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180, भमोरी, न्यू देवास रोड़,
इंदौर–452010 (म.प्र.) फोन : 0731–2554066

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाषित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन